* अथ *

बगलामुखी-स्तोत्र

M Katyayana

भाषा टीका सहित

टीकाकार-श्री सरयू प्रसाद शास्त्री 'द्विजेन्द्र'

प्रकाशक--ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुक्सेलर

राजादरवाजा, वाराणसी-१

फोन नं० : ६४६५०

—०—

मूल्य १) रुपया

प्रकाशक—
ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर
राजादरवाजा, वाराणसी—२२१००१

मूल्य : १ रुपया

मुद्रक :—उर्मिला प्रिंटिंग प्रेस मीरापुर बसही, वाराणसी।

नम्र निवेदन

मन्त्र प्रेमी सहृदय सज्जनों!

यह प्रायः सभी जानते हैं कि समस्त ग्रहारिष्टों की शान्ति के लिये, शत्रुनाश एवं विपत्ति हरण के लिये कलिकाल में बगलामुखी स्त्रोत से बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है। मारण, मोहन, उच्चाटन एवं वशीकरण के लिये तो यह अमोघ अस्त्र कहा गया है। यद्यपि मन्त्र, कवच, स्त्रोत्र, पटल, हृदय, सतनाम, सहस्रनाम, आदि में तन्त्र-भेद, पाठ भेद मिला करते हैं। तथापि मन्त्रमहोदधि, मन्त्रमहार्णव आदि मन्त्रशास्त्र के बृहद् ग्रन्थ ही यहाँ प्रमाण माने जाते हैं। महाविद्या, बनदुर्गा, प्रत्यगिरा और बगला-मुखी स्त्रोत विशेष प्रचलित हैं। कोई भी मन्त्रानुष्ठान एवं जप पाठ विधि अर्थ के ज्ञान बिना सिद्ध नहीं होते। महाभाष्यकार ने ठीक ही लिखा है—

"एकः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥"

अर्थात् एक भी (अशुद्ध) शब्द, चाहे स्वर हो या व्यंजन, व्यर्थ में प्रयोग किया गया अथवा बिना अर्थ जाने कोई भी वाणीरूपी बज्र यजमान का वैसे ही अनिष्ट करता है जैसे कभी इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा था। इसलिये बिना अर्थ या विधि जाने कोई भी पाठ या जप नहीं करना चाहिये। साथ ही शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

यही जानकर आज मैंने 'बगला स्तोत्र' का शुद्ध पाठ एवं भाषान्तर श्रीमान् बाबू गणेश प्रसाद गुप्त, वाराणसी के आदेशानुसार करके मन्त्र-जिज्ञासु पाठकों के सामने उपस्थित किया है। इस स्तोत्र की उपासना में बिना गुरु के प्रवृत्त होना भी ठीक नहीं, क्योंकि तन्त्र-यन्त्र के साधन में सावधानी आवश्यक होती है, तभी तो उन ऋषियों ने मन्त्रशास्त्रों को 'परं गोप्य' बताया है। बगलामुखी की उपासना में विशेष बात यह है कि साधक पीले वस्त्र पहनकर, पीत पुष्प से देवी का पूजन करे और प्रतिदिन मंत्र जाप की संख्या निश्चित रखे। प्रथम दिन जितनी संख्या हो, प्रतिदिन प्रायः उतनी ही संख्या रहनी चाहिए। जपमाला के विषय में भी लिखा है—"हरिद्रामालया कुर्यात् जपं स्तम्भनकर्मणि। स्फटिकैःपद्मबीजैश्च रुद्राक्षैः शुभकर्मणि।" इसलिये साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन नित्य क्रिया से निवृत्त होकर आसन शुद्धि एवं आत्मशुद्धि करके दिग्बन्धन, संकल्प तथा षडंगन्यास आदि करके देवी के ध्यान में निमग्न होकर उस छत्तिस अक्षरवाले महामंत्र का जप कम से कम एक माला (१०८ बार) तो अवश्य करें। आशा है, सहृदय साधकजन इसके अनुसार कार्य करेंगे और सफल मनोरथ होंगे। तभी मैं अपने श्रम को भी सफल समझूँगा। यही जगज्जननी भगवती से प्रार्थना है

विद्वज्जनानुरागी—

श्रीसरयूप्रसाद शास्त्री 'द्विजेन्द्र' काशी

।। ॐ ह्रीं बगलामुख्यै नमः ।।

अथ बगलामुखी-स्तोत्रम्

भाषाटीकासहितम्

(मंगलाचरण)

जय 'द्विजेन्द्र'— भाषा तिलक, बगलामुखी स्वतन्त्र।
साधक-जन मन-कामना, पूर्ण करे वर मन्त्र ।।

सुन्दर कैलास पर बैठे हुए महादेवजी से पार्वती ने पूछा—हे भैरवनाथ—

भैरवी उवाच—

श्रुत्व च बगलापूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो ।। १ ।।

हे महेश्वर ! श्रीबगला देवी की पूजा एवं प्रशंसा सुनकर अब मैं मुखी कवच सहित उनका स्तोत्र सुनना चाहती हूँ ॥ १ ॥ इसलिये शत्रुओं को नाश करने वाला तथा सभी प्रकार के विघ्नों को दूर करने वाला वह कवच मुझे सुनाकर मेरी रक्षा कीजिये,

वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभविनाशनम् ।
शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहि मां दुःखनाशनम् ॥ २ ॥

श्री भैरव उवाच—

शृणु वक्ष्यामि सर्वं त्वां भैरवि प्राणवल्लभे ।
पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ॥ ३ ॥

जो संसार में दुःखनाशक एवं पुण्यप्रद है ॥ २ ॥ यह सुनकर शंकरजी ने कहा--हे प्राण-प्यारी पार्वती ! मैं उस सर्वोत्तम कवच को कहता हूँ । ध्यान से सुनो, जिसको पढ़कर तथा धारण करके मनुष्य तीनों लोकों में विजयी होता है ॥ ३ ॥

अब यहाँ 'अस्य०' से लेकर 'विनियोगः' तक पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़े और यथा-स्थान निम्नलिखित मन्त्रों से अपने अंगों का स्पर्श करे । यही 'कवच' कहलाता है । अर्थात् बगला देवी मेरे शिरकी रक्षा करें, हृदय में एकाक्षरी, 'ह्रीं' बीजमंत्र रक्षा करे, शत्रु संहारिणी श्रीबगला देवी मेरे ललाट की रक्षा करें तथा हाथ में गदा धारण करने

अथ कवचम्—अस्य श्रीबगलामुखीकवचस्य नारदऋषिरनुष्टुप्छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, लं बीजं, ऐं कीलकं पुरुषार्थचतुष्टये जपे विनि-योगः। शिरो मे बगला पातु हृदयमेकाक्षरी परा ॥ ॐ ह्रीं ॐ मे ललाटे च बगलावैरिनाशिनी ॥ गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्ष-दायिनी । अरिजिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी ॥ उदरं नाभि-

वाली मोक्ष-दात्री भगवती बगलामुखी मेरे मुख की सर्वदा रक्षा करें । इसी तरह वैरियों की जीभ पकड़ने वाली बगला देवी मेरे कण्ठ की रक्षा करें । पेट तथा नाभि की रक्षा सबसे बड़ी देवी करें और बड़ी से बड़ी बगला देवी तो देवताओं का भी स्वामिनी

हैं वे मेरे गुप्तेन्द्रियों की रक्षा करें। मेरे दोनों हाथ-पैरों की रक्षा श्रीपार्वतीजी करें। किसी प्रकार के विवाद (शास्त्रार्थ) में, भयंकर परिस्थितियों तथा शत्रुओं द्वारा महान् संकट आ जाने पर पीताम्बरा देवी रक्षा करें, साथ ही शिव की प्यारी नृत्य

८ देशं च पातु नित्यं परात्परा । परात्परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी ॥
हस्तौ चैव तथा पादौ पार्वती परिमातु मे । विवादे विषमे घोरे संग्रामे
रिपुसङ्कटे ॥ पीताम्बरधरा पातु सर्वाङ्गे शिव नर्तकी । श्री विद्या समया
पातु मातंगी पूरितां शिवा ॥ पातु पौत्रं सुतं चैव कलत्रं कालिका
मम । पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा । रन्ध्रे हि बगला
देव्या कवचं मन्मुखोदितम् । नैव देयम मुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥

कक्षा में चतुर भगवती शिवा तथा श्री विद्या एवं मातंगी देवी मेरे सभी अंगों की रक्षा करें। मेरे पुत्र-पौत्र एवं कलत्र की रक्षा कालिका भवानी करें और त्रिशूल धारण करने वाली देवी मेरे माता-पिता एवं भाई की रक्षा करें। हे प्रिये ! मेरे मुख से ८

निकला हुआ यह पवित्र कवच किसी अनधिकारी या छिद्रान्वेषी व्यक्ति को न देना चाहिये, क्योंकि यह सब प्रकार की सिद्धियों को देनेवाला है। इस बगलामुखी कवच के पढ़ने एवं धारण करने से साधकों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। इसलिये इस कवच के जाने बिना जो बगलामुखी मूलमंत्र का जप करता है अथवा स्तोत्र-पाठ
९ करता है, उस पर योगिनियाँ अप्रसन्न होती हैं और उसके रक्त को आनन्द पूर्वक

पठनाद्धारणादस्य पूजनाद् वाञ्छितं लभेत । इदं कवचमज्ञात्वा यो
जपेद् बगलामुखीम् ॥ पिबन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य
सादराः ॥वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा ॥ महाभये विपत्तौ
च पठेद्वा पाठयेत्तु यः । तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् भक्तियुक्तस्य पार्वती ॥

पीती हैं। अतः कवच अवश्यमेव जानना चाहिये। क्योंकि मारण, मोहन, उच्चाटन तथा आकर्षण एवं वशीकरण के लिये हे पार्वती ! जो साधक इस कवच का जप ९
करता अथवा कराता है, उस श्रद्धालु एवं भक्तजन की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इति श्रीरुद्रयामले बगलामुखीकवचं सम्पूर्णम् ।

कवच के बाद अंगन्यास करके स्तोत्रपाठ करना चाहिये । अतः उसके लिये भी
 इस प्रकार विनियोग करे—इस बगलामुखी स्तोत्र के नारद ऋषि और बगला देवता
हैं । मैं अपने निकट रहने वाले दुर्जन एवं विरोधी सभी शत्रुओं की वाणी, मुख, पैर

१० **अथ न्यासः—** अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान्नारदऋषिः बगलामुखीदेवता मम सन्निहितानां दुष्टानां विरोधिनां वाङ्मुखपद-जिह्वाबुद्धीनां स्तम्भनार्थे श्रीबगलामुखीवरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः ।

दबाने के लिये तथा श्री बगलामुखी देवी की कृपा पाने के लिये (मंत्रसिद्धि के लिये) जप करने एवं अंगन्यासपूर्वक स्तोत्र पाठ के लिये यह विनियोग करता हूँ । १०
(पृथ्वी पर जल छोड़ दे) ।। 'ॐ ह्रीं०' कहकर दोनों अंगुठों को छूवे, 'ॐ बगलामुखी० कहकर दोनो तर्जनी अंगुली को, 'ॐ सर्वदुष्टानां' कहकर मध्यमा को 'ॐ

वाचं मुखं पदं स्तम्भय' कहकर दोनों अनामिका को, ॐ जिह्वां कीलय कीलय, कहकर
 कनिष्ठिकाओं (कानी अंगुलियों) को स्पर्श करे । 'ॐ बुद्धिं विनाशय 'ॐ ह्रीं' स्वाहा'
कहकर हथेली के दोनों ओर छूवे (तथा ताली पीटे) । इसी प्रकार 'ॐ ह्रीं' कहकर

१ ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् । जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । बुद्धिं नाशय, ॐ ह्रीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादि न्यसेत् ।

हृदय को, ॐ बगलामुखी ०' कहकर सिर को 'ॐ सर्वदुष्टानां०' कहकर शिखा को' ११
'ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय' कहकर दोनों भुजाओं को, 'ॐ जिह्वां कीलय कीलय' कहकर दोनों नेत्रों को और 'बुद्धिं नाशय ओं ह्रीं, कहकर चुटकी बजावे । न्यास के बाद इस प्रकार ध्यान करे । सोने के सिंहासन पर बैठी हुई, तीन नेत्र

वाली, पीताम्बर धारण करने से सुन्दर लगने वाली, सुवर्ण की कान्ति के समान गौरवर्ण वाली, अर्द्ध चन्द्राकार मुकुट धारण करने वाली, सुन्दर चम्पा कुसुम की माला वाली, अपने हाथों में मुद्गर, पास आदि धारण करने वाली, अनेक आभूषणों से सुसज्जित शरीर वाली एवं तीनों लोकों को (आश्चर्य से) स्तम्भित (मोहित करने

अथ ध्यानम्—ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांगरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां संबिभ्रतीं भूषणैर्व्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥ अथ मन्त्रः—ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं स्वाहा ।

वाली) 'श्री बगलामुखी' नाम की भगवती का मैं ध्यान करता हूँ ॥ (मन्त्रार्थ—'ॐ ह्रीं' हे बगलामुखी देवि ! आप सभी दुष्टजनों की वाणी, मुख और पैरों को रोक दें, जीभ को कीलित (बोलना बन्द) कर दें तथा उनकी बुद्धि विनष्ट कर दें, जिससे वे कुछ न कर सकें 'ह्रीं ॐ स्वाहा' ॥

सुधा-सागर के बीच में मणि-मन्डप के रत्नों की बनी वेदी पर विराजमान, सिंहासन पर बैठी हुई गौर वर्णवाली, पीताम्बर एवं अनेक प्रकार के आभूषणों तथा मालाओं से सुसज्जित शरीरवाली, हाथों में शत्रुओं की जिह्वा एवं मुद्गर धारण करने वाली

अथ स्तोत्रम्—ॐ मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्। पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥१॥ जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् । गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥२॥ चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलीं, लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम् । गदाहतविपक्षकाङ्क्षलितलोलजिह्वा-

श्री बगुलामुखी देवी को मैं भजता हूँ ॥ १ ॥ अपने बाँयें हाथ से जीभ के अन्त भाग को पकड़ कर शत्रुओं को पीड़ा पहुँचानेवाली तथा दाहिने हाथ की गदा से मारती हुई उस दो भुजावाली भगवती को मैं प्रणाम करता हूँ ॥२॥ चमकते हुए सोने के

कुण्डलों से विभूषित सुन्दर गालवाली, चम्पा तथा सुवर्ण के समान चमकते हुए मुखचन्द्र वाली, गदा के प्रहार से शत्रुदल को नष्ट करनेवाली, चंचल (लपलपाती हुई) जीभ वाली तथा वैरीजनों के मन और वाणी को स्तम्भित करने वाली बगला देवी को मैं

स्वर्णां स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनः स्तम्भिनीम् ॥ ३ ॥ पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रक्तोत्पले मण्डपे, सत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् । स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद् गदां बिभ्रमामित्थं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥ ४ ॥ देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलीम्, भक्त्या वामकरे निधाय च पुनर्मन्त्रं मनोज्ञाक्षरम् । पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत्

स्मरण करता हूँ ॥ ३ ॥ अमृत-सागर में लाल कमल के मण्डप से सुशोभित सिंहासन पर शत्रुओं को पटक कर उन्हींके मृतशरीर (शवासन) पर बैठी हुई, कनक कान्तिवाली, शत्रुओंकी जीभ को खींचकर अपनी गदा घुमाती हुई, देवी का ध्यान जो करता है,

उसकी सभी विपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं ॥ ४ ॥ इसलिए हे देवि ! जो राजा आपके चरण-कमलों की पूजा के लिये पीले पुष्पों की पुष्पांजलि बाँयें हाथ में लेकर भक्तिपूर्वक सुन्दर एवं स्पष्ट मन्त्र का उच्चारण करता हुआ, साथ ही भगवती के आसन का

पार्थिवः, तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत्तत्क्षणात् ॥५॥ वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति, क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति । गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः, श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥ ६ ॥

ध्यान करके कुम्भक प्राणायाम द्वारा बीज मंत्र (ह्लीं) का भी स्मरण करता है, उसके शत्रुओं के हृदय में और वाणी में भी तत्काल ही जड़ता आ जाती है, अर्थात् उसका मुख बन्द हो जाता है और हृदय की गति बन्द हो जाती है ॥ ५ ॥ सर्वदा श्रीसम्पन्न हो बगलमुखी माता ! आपके यन्त्र से नियन्त्रित होने पर वक्ता भी गूँगा बन जाता है, राजा रंक हो जाता है, अग्नि भी शीतल हो जाती है, क्रोधी शत्रु शान्त हो जाता है,

असज्जन सज्जन बन जाता है, शीघ्र चलने वाला आदमी भी लँगड़ा हो जाता है, घमण्डी पुरुष का घमण्ड चूर हो जाता है और सर्वज्ञ व्यक्ति भी मूर्ख हो जाता है । इसलिये हे कल्याण करने वाली देवि ! तुम्हें बार बार नमस्कार है ।। ६ ।। हे माता !

१६ मन्त्रस्यात्मबलं विपक्षदलनं स्तोत्रं पवित्रं च ते, तन्त्रं वादि-
नियंत्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते । मातः श्रीबगलेति-
नामललितं यस्याऽस्ति जन्तोर्मुखे, त्वन्नाम ग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भो
भवेद्वादिनाम् ।। ७ ।। दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं
भूभृद्भीशमनं चलन्मृगदृशाञ्चेतःसमाकर्षणम् । सौभाग्ययैकनिकेतनं

एक मात्र तुम्हारा मंत्र ही शत्रुओं को दलन करने में समर्थ है, तुम्हारा यह स्तोत्र परम पवित्र है और तुम्हारा यंत्र भी वादियों को नियंत्रण करने वाला तीनों लोकों में श्रेष्ठ एवं विजय देने में विचित्र है । इसी प्रकार हे जननि ! 'बगलामुखी' यह तुम्हारा नाम जिसके मुख में सर्वदा रहता है अथवा सभा-समाज में जो उच्चारण करे तो शत्रुओंका मुख १६

बन्द हो जावे ।।७।। हे मातः ! दुष्टों का दमन करने वाला, कठीन से कठीन विघ्नों को शान्त करने वाला, दारिद्र्य-नाशक तथा राजभय को शान्त करने वाला एवं चंचल नेत्रवाली सुन्दरियों के चित्त को खींचने वाला (वश में करने वाला), सौभाग्य का एक-मात्र स्थान, समदर्शिता एवं दयालुता से युक्त काल का भी कालस्वरूप यह आपका

स१७ समदृशं कारुण्यपूर्णामृतं मृत्योर्मारणाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं
वपुः ।। ८ ।। मातर्भञ्जय मे विपक्षवदनं जिह्वा च सङ्कीलय, ब्राह्मीं
मुद्रय नाशयाशु धिषणमुग्रां गतिं स्तम्भय । शत्रूंश्चूर्णय
देवि ! तीक्ष्णगदया गौरांगि पीताम्बरे, विघ्नौघं बगले ! हर प्रणमतां
कारुण्यपूर्णेक्षणे ।। ९ ।। मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वा-

दिव्य शरीर मेरे सामने प्रत्यक्ष (प्रकट) होवे, यही प्रार्थना है ।।८।। हे गौर बदन वाली तथा पीताम्बर धारण करने वाली बगलादेवि ! मेरे विपक्षियों का मुख तोड़ डालो, उनकी जीभ स्तम्भित कर दो, उनकी वाणी (विद्या) बन्द कर दो और बुद्धि १७

बद्ध कर दो तथा उसके चलने की गति रोक दो और अपनी तीक्ष्ण गदा से शत्रुओं को कुचल कर चूर्ण-चूर्ण कर दो। हे करुणापूर्ण नेत्रवाली माता! अपनी शरण में आये जनों की विघ्न-बाधाओं एवं विपत्तियों को हर लो ॥ ९ ॥ हे माता! भैरवी, भद्रकाली, विजया, वाराही, विश्वाश्रया, श्रीविद्या, समया, महेशी, बगला, कामेशी, रामा, रमा,

श्रये, श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि राम रमे। मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे! दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम् ॥ १० ॥ संरम्भे चौरसंघे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये, विद्या वादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम्। वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा गच्छस्तिष्ठं स्त्रिकालं

मातंगी, परात्परा, त्रिपुरादेवी आदि नामवाली, भक्तों को भुक्ति-मुक्ति देनेवाली, हे जगज्जननि! मैं आपका सेवक हूँ, शरण में आया हूँ, अतः आप मेरी रक्षा करें ॥१०॥ हे मातः! समर में चोरों के बीच, मार-पीट के समय, जेल जाने में नदी-तालाब

के जल में (बाढ़ वृष्टि के उपद्रव में), शास्त्रार्थ करने में, कथोपकथन में, राजा के क्रोध करने पर, शपथ ग्रहण करते समय, रात में, वशीकरण अथवा स्तम्भीकरण में, शत्रु-वध करने में, निर्जन-वन में, चलते हुए अथवा बैठे हुए, इस प्रकार तीनों कालों (प्रातः, मध्याह्न सायंकाल,) में जो कोई इस स्तोत्र को पढ़ता है वह धीर पुरुष शीघ्र ही कल्याण प्राप्त करता है ॥ ११ ॥ जो मनुष्य देवी के इस पवित्र स्तोत्र का

यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥ ११ ॥ नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठन्त्यादराद्, धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले। राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणः सर्पा मृगेन्द्रादिकाः

प्रतिदिन प्रेम से पाठ करता है तथा आदरपूर्वक इस मंत्र को ताबीज के रूप में युद्ध-स्थल में जाते समय अपने बाहु, कलाई अथवा गले में धारण करता है, उसके सामने राजा, शत्रु, मतवाला हाथी, विषैला सर्प एवं सिंह आदि सभी मोहित हो जाते हैं। अर्थात् कोई भी हिंसक जन्तु उनपर आक्रमण नहीं कर सकता। अपितु उसके

पास लक्ष्मी तथा अणिमादि आठों सिद्धियाँ भी स्थिर हो जाती हैं ।।१२।। हे जननि ! तुम सबसे श्रेष्ठ विद्या (ब्रह्मविद्या) तथा तीनों लोकों की जननी हो । भक्तों के विघ्न समूह को हरने वाली, स्त्रियोंको आकर्षण करने वाली एवं तीनों लोकोंके आनन्द को

२० ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सिद्धयः ।। १२ ।।
त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंच्छेदिनी, योषाकर्षण-
कारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्द्धिनी । दुष्टोच्चाटनकारिणी जनमनः-
सम्मोहसंदायिनी जिह्वाकीलनभैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ।।१३।।

बढ़ाने वाली हो । दुष्टों का उच्चाटन करने वाली, जनता को मोहनेवाली, एवं शत्रुओं की जिह्वा को कीलने वाली, भैरवी देवी वैसे ही सर्वश्री विजय पाती हैं, जैसे ब्रह्मादि देवताओं के मंत्र सर्वत्र विजयी होते हैं ।। १३ ।। इस संसार में जिसने इस स्तोत्र

का पाठ किया, उसने विद्या, लक्ष्मी, सौभाग्य, दीर्घायु, पुत्र-पौत्र तथा राज्यसुख एवं मान-प्रतिष्ठा, भोग विलास, वशीकरण आदि सभी प्रकारके सुख को प्राप्त कर

विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्रः पौत्रः सर्वसाम्राज्य-
२१ सिद्धिः । मानं भोगो वश्यमारोग्यसौख्यं, प्राप्तं तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नरेण
।।१४।। यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि । दुष्टानां निग्रहार्थाय
तद्गृहाण नमोऽस्तु ते ।।१५।। ब्रह्मास्त्रमिति विख्यात त्रिषु लोकेषु

लिया ।।१४।। इसलिये हे परमेश्वरी ! मैंने देवी के दमन के लिये जो कुछ निवेदन किया है अथवा स्वयं जप-साधन किया है, उसे आप स्वीकार करिये अन्त में पुनः श्रीचरणों में प्रणाम है ।।१५।। तीनों लोकों में प्रसिद्ध यह ब्रह्मास्त्र रूप स्तोत्र गुरुभक्त

१. 'कोषा' इत्यपि दृश्यते क्वचित् पाठः ।

बगला एवं श्रद्धालु जन को ही देना चाहिए, जिस-किसी को नहीं ॥१६॥ बस, अन्त में स्तोत्र
दो भुजावाली पीले वस्त्र धारण करने वाली, शिला एवं मुद्गर हाथ में धारण करने

विश्रुतम् । गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥१६॥ पीता-
२२ म्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्ज्वलाम् । शिलामुद्गरहस्तां च
स्मरेत्तां बगलामुखीम् ॥ १७ ॥

वाली त्रिनयना भगवती श्री बगलामुखी का स्मरण सर्वदा करना चाहिए ॥१७॥
इति श्रीद्विजेन्द्रकविकृत भाषा-टीकासहितं रुद्रयामलोक्तं बगलामुखीस्तोत्रं समाप्तम् ।

प्रमाण है। पुस्तक के आवरण पर माँ पीताम्बरा का भव्य चित्र दिया गया है। पुस्तक पर भारत विख्यात सन्त-महात्माओं एवं विशिष्ट विद्वानों की शुभ सम्मतियाँ भी प्राप्त हुई हैं। ऐसी बहुमूल्य पुस्तक का मूल्य मात्र ७—००

बगलामुखी-स्तुति

मूलमात्र, ३२ पेजी, नित्य पाठोपयोगी संस्करण

सम्पादक—आचार्य पं० श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री इसमें—बगलामुखी-स्तुति, स्तोत्र कवच, शतनाम, चालीसा, आरती, मन्त्र-पुष्पाञ्जलि तथा देव्यपराध क्षमापन स्तोत्र दिये गये हैं यह जगदम्बा बगलामुखी के प्रतिदिन पाठकर्ताओं के लिए बहुत ही उपयोगी संस्करण है। मूल्य १—००